gyanodaya prabha

अक्टूबर 2024
अंक 31

सम्पादकीय

“यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

श्री गीता में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि “हे अर्जुन, जब-जब इस धरती पर धर्म का पतन होता है,”(यहाँ धर्म का अर्थ सिर्फ धार्मिक नियमों से नहीं है, बल्कि यह व्यापक अर्थ में न्याय, सत्यता, और मानवीय मूल्यों की रक्षा के संदर्भ में है) और अधर्म का उदय होता है, तब मैं स्वयं अवतार लेता हूं।” (यहाँ अधर्म का तात्पर्य अन्याय, असत्य, और मानवता के विरुद्ध कार्यों से है) भगवान कृष्ण यह संकेत देते हैं कि जब समाज में नकारात्मक शक्तियां प्रबल होती हैं, तब वे धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश करने के लिए अवतार लेते हैं।इस श्लोक के माध्यम से, भगवान कृष्ण एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण संदेश देते हैं कि धर्म की रक्षा और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष में वे सदैव तत्पर रहते हैं। यह कथन यह आश्वासन देता है कि न्याय और सत्यता की हमेशा रक्षा की जाती रहेगी , भले ही समय-समय पर चुनौतियाँ क्यों न आएं।

वास्तव में बुराई और अच्छाई का संघर्ष मानवता के इतिहास का एक अनिवार्य हिस्सा रहा है। यह न केवल धार्मिक और दार्शनिक विचारों में परिलक्षित होता है, बल्कि साहित्य, कला और सांस्कृतिक परंपराओं में भी दिखाई देता है ।

बुराई का अर्थ नकारात्मकता, अन्याय और नैतिक पतन से है, जबकि अच्छाई का संबंध सकारात्मकता, न्याय और नैतिकता से है। ये दोनों अवधारणाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं और इनके बीच का संघर्ष जीवन के विभिन्न पहलुओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। न्याय और अन्याय के मध्य संघर्ष और जीत के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं -

महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से बुराई, अर्थात् ब्रिटिश उपनिवेशवाद, के खिलाफ संघर्ष किया। उनकी रणनीति ने लाखों लोगों को प्रेरित किया और भारतीय स्वतंत्रता की दिशा में महत्त्व पूर्ण कदम बढ़ाए। गांधीजी का जीवन बुराई पर अच्छाई की जीत का एक जीवंत उदाहरण है।

नेल्सन मंडेला ने रंगभेद के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने अन्याय और बुराई के खिलाफ अपने जीवन का बलिदान

किया। उनके नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का अंत हुआ, जो बुराई पर अच्छाई की एक और मिसाल है।

भारतीय पौराणिक कथा 'रामायण' में भगवान राम का रावण के खिलाफ युद्ध बुराई पर अच्छाई की जीत का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। राम ने अपने धर्म का पालन करते हुए रावण का वध किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि धर्म और सत्य का मार्ग हमेशा विजयी होता है।

महाभारत की कथा में कौरवों और पांडवों के बीच का संघर्ष बुराई और अच्छाई के बीच का संघर्ष है। पांडवों का धर्म और सत्य के प्रति समर्पण उन्हें अंततः विजय दिलाता है शेक्सपीयर के 'हैमलेट' नाटक में बुराई (क्लॉडियस द्वारा किए गए हत्या) के खिलाफ अच्छाई (हैमलेट का प्रतिशोध) का संघर्ष स्पष्ट है। अंत में, सच और न्याय की स्थापना होती है।

जॉर्ज ऑरवेल की '1984' के उपन्यास में बुराई का प्रतीक तानाशाही शासन है, जबकि अच्छाई के लिए संघर्ष करने वाले पात्र मानवता की स्वतंत्रता की खोज करते हैं।

समाजिक दृष्टिकोण से विश्वभर में हुए कई सामाजिक आंदोलनों ने बुराई के खिलाफ अच्छाई की जीत को दर्शाया है। जैसे, महिला अधिकारों के लिए लड़ाई, पर्यावरण संरक्षण, और साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष।

कला और संस्कृति ने हमेशा अच्छाई की विजय के संदेश को फैलाया है। फिल्में, संगीत और साहित्य इस संघर्ष को जीवंत करते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य करते हैं।

बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश न केवल ऐतिहासिक, धार्मिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्त्व पूर्ण है, बल्कि यह आज के समाज में भी प्रासंगिक है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम हमेशा सत्य और न्याय के मार्ग पर चलें, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों। अच्छाई की विजय अंततः बुराई पर हमेशा प्रबल होती है, और यह सिद्धांत मानवता के भविष्य को एक बेहतर दिशा में ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस प्रकार, हमें चाहिए कि हम अपने जीवन में अच्छाई के प्रतीकों को पहचानें और उन्हें आगे बढ़ाने का प्रयास करें, ताकि हम एक बेहतर और नैतिक समाज का निर्माण कर सकें।यदि व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया की शुरूआत स्वयं से हो तो परिवार निर्माण ,समाज निर्माण के साथ ही राष्ट्र और विश्व निर्माण की प्रक्रिया में हम अपना अहम् योगदान दे सकते हैं और एक ऐसे विश्व की परिकल्पना कर सकते हैं जिसमें दया ,ममता ,करुणा, स्नेह ,प्रेम ,आशीर्वाद ,सद्भावना जैसे मानवीय गुणों को देखा जा सकता है। बुराई और अच्छाई प्रत्येक युग में विद्यमान रही है, बस हमें इन पर विजय प्राप्त करने की आवश्यकता है जो कठिन अवश्य है पर नामुमकिन कदापि नहीं। आइए अपने सपनों का संसार बनाएँ।

अक्टूबर माह की गतिविधियाँ

पचमढ़ी की शैक्षिक यात्रा : एक अविस्मरणीय रोमांच का अनुभव!

ज्ञानोदय सर्वमंगल हायर सेकेंडरी स्कूल ने विद्यार्थियों के लिए 4 से 8 अक्टूबर 2024 तक एक शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया।

विद्यार्थी भारत स्काउट्स और गाइड्स के साथ नेशनल एडवेंचर प्रोग्राम पूरा कर बेहद उत्साहित हुए ! यह ऐसा था जैसे जिंदगी की एक नई किताब के हर पन्ने पर रोमांच और सीख के नए रंग बिखरे हों।

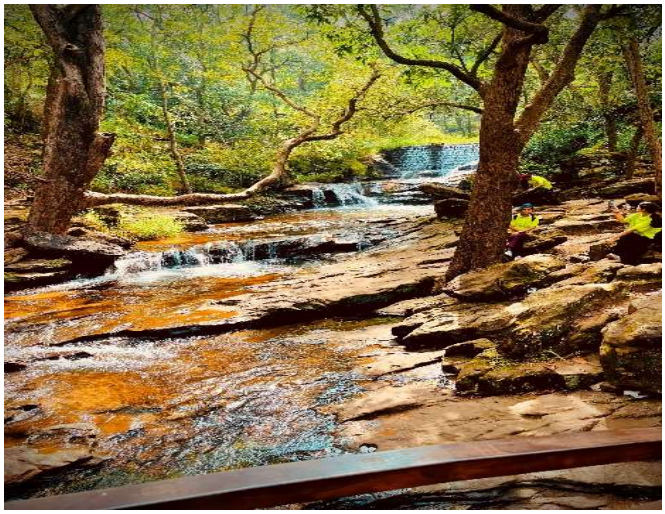

इस अद्भुत यात्रा में विद्यार्थियों ने जटा शंकर, चौरागढ़, पांडव गुफाएं, गुप्त महादेव, देवगिरि सनसेट पॉइंट और बायसन लॉज जैसे अद्भुत स्थलों की खोज की–जिनका सौंदर्य आँखों के साथ-साथ दिल को भी सुकून देता है।

हर दिन विद्यार्थियों ने रोमांच की नई ऊंचाइयों को छुआ। रॉक क्लाइम्बिंग से लेकर ज़िप वायर, स्काई साइकलिंग, और तीरंदाजी तक हर गतिविधि ऐसा लगा जैसे साहस और आत्मविश्वास की परीक्षा दे रही हो। यह किसी नदी की तरह था जो हर मोड़ पर नई ऊर्जा और उत्साह से भरी हो।

और हर शाम का कैम्पफायर... जैसे दिनभर की थकान को धुएं में बदल कर हवा में उड़ा देता हो! वहाँ बैठे सभी साथी, कहानियाँ और हंसी ठहाके, इस अद्वितीय अनुभव को हमेशा के लिए यादगार बना गए।

धूमधाम से मना विद्यालय का वार्षिक उत्सव

ज्ञानोदय एस.एम.व्ही.एम् विद्यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन 23 एवं 24 अक्टूबर को प्रातः और मध्याह्न काल में किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विविध विषयों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन श्री रवीश श्रीवास्तव (एस.डी.एम. खुरई) , श्री एस.आर. शर्मा (बी.ई.ओ. खुरई) , संस्था के अध्यक्ष श्री मंत धर्मेन्द्र सेठ, और विद्यालय के प्राचार्य डॉ. अभिनव शुक्ल ने किया।प्रदर्शनी का अवलोकन विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों , शिक्षकों, और गणमान्य नागरिकों द्वारा किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

24 अक्टूबर 2024 को विद्यालय के विशाल प्रांगण में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन संध्याकाल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना एवं नमोकार मंत्र के साथ हुई। तत्पश्चात, छात्राओं ने मनमोहक नृत्य के माध्यम से गणेश वंदना प्रस्तुत की।.

छात्र-छात्राओं ने पुराने गीतों और नृत्य के द्वारा कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। इस अवसर पर अतिथियों और प्रतिभावान विद्यार्थियों को मंच से सम्मानित किया गया। बेम्बू डांस की अद्भुत प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्मुध कर दिया।

छात्राओं ने शास्त्रीय संगीत की लयात्मकता से कार्यक्रम में मिठास घोल दी, वहीं ऊर्जावान विद्यार्थियों के भांगड़ा नृत्य ने दर्शकों को थिरकने पर मजबूर कर दिया। विद्यार्थियों द्वारा की गई वाद्य यंत्र प्रस्तुति ने सभी के दिलों को छू लिया।

अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किए गए एकांकी के माध्यम से बच्चों के अभिनय और वक्तव्य कौशल को प्रदर्शित किया गया। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. अभिनव शुक्ल ने वार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से विद्यालय की उपलब्धियों एवं प्रगति से सभी को अवगत कराया।

संस्था अध्यक्ष श्री मंत धर्मेन्द्र सेठ और मुख्य अतिथि महोदय ने अपने प्रेरणादायक वक्तव्यों से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। श्री संतोष कुमार जैन ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम का गौरव बढ़ाया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान एवं आभार प्रदर्शन के साथ हुआ।

इस वार्षिक उत्सव ने विद्यालय के सभी सदस्यों के बीच एकता और सहयोग की भावना को और मजबूत किया।

विभिन्न प्रदर्शनी - विद्यालय के वार्षिक उत्सव के दौरान विभिन्न विषयों - हिंदी ,गणित ,विज्ञान ,सामाजिक विज्ञान , अंग्रेजी,कला की अनेक रोचक एवं शोधपरक् प्रदर्शनी लगायी गयीं जिसमें विद्यार्थियों की रचनात्मकता देखने को मिली। प्रदर्शनी को दर्शकों ने बहुत सराहा एवं इसे आगे भी जारी रखने की इच्छा व्यक्त की।

हिंदी प्रदर्शनी

हिंदी प्रदर्शनी का विषय -'हिंदी की विकास यात्रा में बुन्देली का योगदान'था। प्रदर्शनी विशेष रूप से बुन्देली भाषा पर आधारित थी।जिसमे बुन्देली के विकास के साथ -साथ ,हिंदी सिनेमा का विकास , रूपए का इतिहास ,संस्कृत और हिंदी के रोचक तथ्य , बुन्देली शब्दकोष का निर्माण के साथ ही 100 से अधिक पहेलियों का प्रदर्शन किया गया। इसके अतिरिक्त बुन्देली भाषा के मुहावरे , फिल्मों में बुन्देली भाषा के संवादों के प्रयोग को दर्शाया गया। बुन्देली भाषा के प्रमुख कवि एवं अनेक फिल्मों के संवाद को बुन्देली में अनुवाद भी आकर्षक का केंद्र बने रहे।समग्र रूप से हिंदी प्रदर्शनी ने सब को अचंभित कर दिया। प्रदर्शनी में ज्ञानोदय के छात्रों और हिंदी विभाग के समस्त शिक्षकों सहित प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ल का उल्लेखनीय योगदान रहा।

अंग्रेजी प्रदर्शनी

अंग्रेजी विभाग ने कई प्रदर्शनियों का आयोजन किया। इनमें से कुछ का उल्लेख करें तो 'क्या आप अनुमान लगा सकते हैं?' नामक एक चार्ट को सराहा गया।

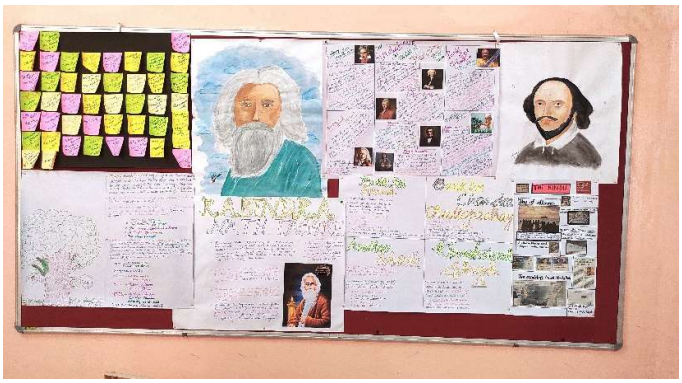

मुहावरे, आदमी के सात चरणों का एक घर जिसे कार्डबोर्ड से बनाया गया था, और साहित्य और व्याकरण पर एक मॉडल, विलोम और पर्यायवाची शब्द, विलियम शेक्सपियर के कार्य, अंग्रेजी रंगमंच/हॉलीवुड, यूरोपीय भाषाओं का चार्ट, हिंदी में कहावतों का अंग्रेजी अनुवाद, बुंदेलखंडी भाषा का अंग्रेजी अर्थ के साथ उल्लेख, भारतीय मसाले और उनके हिंदी से अंग्रेजी नाम आगंतुकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहे।

सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी: एक शैक्षिक उत्सव

हमारे विद्यालय में वार्षिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा एक अद्वितीय प्रदर्शनी तैयार की गई।

इस प्रदर्शनी में विश्व युद्ध की स्थिति, भारतीय संविधान, संविधान की विशेषताएं, सरकार के प्रकार, नई संसद भवन, पुरानी संसद भवन, लोकसभा और राज्यसभा की शक्तियाँ, संविधान में अनुसूचियाँ, संविधान के भाग, भारतीय किले, सांची स्तूप, राज्यों का पुनर्गठन, भगवान राम की वंशावली, जैन गुरु-शिष्य परम्परा, पूर्वी और पश्चिमी घाट, उत्तर पूर्वी राज्यों की संस्कृति ज्वार के प्रकार जैसे विषयों को प्रदर्शित किया गया।

इस प्रदर्शनी तैयार करने में 60 घंटे से भी ज्यादा का समय लगा और कक्षा 5 से 12 तक के 60 से अधिक छात्रों ने इसमें भाग लिया।

यह परियोजना-आधारित शिक्षा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका मार्गदर्शन शैलेंद्र कुर्मी, रूपेश मिश्रा, हेमंत मेहर, नरेंद्र कुमार, अनुराग सिंह ठाकुर, खुशबू मंसूरी, अनुजा मोदी जैसे अनुभवी शिक्षकों ने किया।

प्रदर्शनी का उद्देश्य छात्रों को सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करना और उनकी शिक्षा में नवाचार लाना था। यह प्रदर्शनी न केवल छात्रों के लिए बल्कि समस्त विद्यालय परिवार के लिए एक गर्व का क्षण था।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने कहा, "यह प्रदर्शनी हमारे छात्रों की प्रतिभा और मेहनत का परिणाम है। हमें अपने छात्रों और शिक्षकों पर गर्व है।"

इस प्रदर्शनी के माध्यम से हमने देखा कि कैसे शिक्षा के माध्यम से हम अपने छात्रों को भविष्य के नेताओं में बदल सकते हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रदर्शनी भी सराहनीय रही।

विद्यालय को मिला अवार्ड

प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ल का कुशल नेतृत्व , विद्यालय प्रबंधन , शिक्षक गण एवं परोक्ष अपरोक्ष रूप से विद्यालय परिवार के सभी साथियों के सामूहिक योगदान के फलस्वरूप प्रगति पथ पर निरंतर आगे बढ़ते हुए ज्ञानोदय एस.एम.व्ही.एम. हायर से. स्कूल ने एक और मुकाम हासिल किया ।एडुकेशन वर्ल्ड इंडिया स्कूल रेकिंग्स 2024-25 के लिए सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में डे बोर्डिंग स्कूल में तेरहवां स्थान और सागर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।यह हमारे विद्यालय के लिए गर्व का विषय है

साहित्यिकी

विद्यार्थी कोना

हर किसी की जिंदगी में गुरु जरूर होते हैं ,
विद्यार्थी शिक्षक के गुरुर होते हैं ।
रोना आ जाता है,जब एक अच्छे शिक्षक हमसे से दूर होते हैं ।
गुरु के बिना तो हम अधूरे होते हैं ,
आ जाए जिंदगी में एक अच्छे गुरु तो तब हम अधूरे से पूरे होतेहैं।।

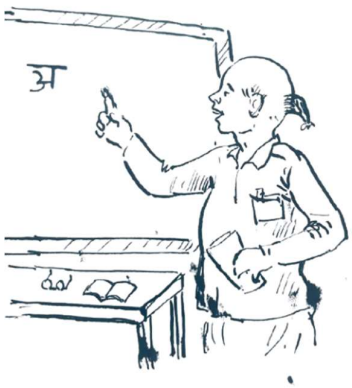

आदर्श दांगी कक्षा 8 डी

स्कूल की पिकनिक (कहानी)

सायं का समय था और स्कूल की तरफ से हम जंगल में पिकनिक के लिए गए ।वहाँ हमने तालाब में नहाया ।फिर लौटते समय हम रात को जंगल में से गुजरे और तभी हम रास्ता भटक गए ।फिर हमने आसपास रास्ता खोजने की कोशिश की । फिर हमारी मुलाकात एक अनजान आदमी से हुई ।उसने हमें रास्ता बताया तब हम जंगल से बाहर निकले । तभी हमें पता चला कि इक्यासी बच्चों में से एक बच्चा गायब था ।फिर हम उसी जंगल में पुनः गए ।अन्दर जाने पर हमने देखा कि वह बेहोश पड़ा है ।फिर हम लोगों ने उसके ऊपर पानी डाला । जब वह होश में आया तो उसने हमें बताया कि वह पीछे रह गया था और वह अकेलेपन के डर से बेहोश हो गया था ।फिर हम सब बच्चे उसको साथ लेकर ख़ुशी ख़ुशी घर आ गए । हमें पता चल गया था कि हमें किसी भी परिस्थिति में डरना नहीं चाहिए और मुसीबत में हिम्मत से काम लेना चाहिए ।

(लोकेन्द्र राजपूत कक्षा 9 डी)

माँ

माँ है तो सब है वर्ना सब बेकार है ।माँ ही हमारी प्रथम गुरु होती है ।माँ का प्यार बच्चों के लिए बहुत बड़ा तोहफा होता है । माँ अपने बच्चों के लिए कितना कुछ करती है, इसका बच्चों को अंदाजा भी नहीं होता । मेरी माँ बहुत प्यारी है । हम अपनी माँ के बिना एक पल भी नहीं रह सकते थे पर अब होस्टल आना पड़ गया तो मैं थोड़ा सा अपनी माँ से दूर हो गयी । अब जब भी घर जाती हूँ , तो

मम्मी, मम्मी चिल्लाने लगती हूँ । जब भी मुझे चोट लग जाए या कुछ अनहोनी हो जाए तो सबसे पहले मुँह से माँ शब्द ही

निकलता है।किसी ने क्या खूब कहा है -"कि दवा जब असर न करे तो जो नज़र उतारती है वो माँ है।जनाब माँ हार कहाँ मानती है।जब साथ छोड़ देती है दुनिया तो वो चलती है अपने साथ ।कैसे भी हो हालात पर माँ कभी नहीं बदलती है" माँ इस दुनिया में हर बच्चे के लिए बहुत खास होती है। बिन माँ ये जीवन , ये घर एकदम सूना सा लगता है। माँ का क़र्ज़ चुकाना बड़ा मुश्किल काम है जनाब उसे कभी नहीं चुकाया जा सकता।

अनन्या जैन कक्षा 9 ए

पचमढ़ी यात्रा (यात्रा वृतांत)

हमारा सफ़र शुरू हुआ था 3 अक्टूबर को। हम कुल 10 छात्र और छात्रा थे तथा साथ में 8 अध्यापक हमारे साथ में थे। हम रात्रि 8 बजे स्कूल में आ गए क्योंकि हमारी विंध्याचल एक्सप्रेस ट्रेन रात्रि 9:30 बजे आने वाली थी।

हम सभी ट्रेन से सुरक्षित पिपरिया पहुँच गए और वहाँ से बस लेकर पचमढ़ी। पिपरिया हम लोग दोपहर को लगभग 12 से 1 बजे तक पहुँच गए थे। बस से 3 घंटे यात्रा करने के बाद तकरीबन 3बजे तक हम पंचमढ़ी पहुंचे।

पहले दिन हमें राजेंद्र गिरी सनसेट प्वाइंट जाना था। हम वहां तक पहुँचे परन्तु वहां सूर्यास्त हो चुका था। वहाँ का दृश्य मनमोहक था ।आसमान में रंग बिरंगे नजारे थे। शाम को लगभग 6:30 बजे तक हम वापस आ गए। हमें वहाँ टेंट प्रदान किए गए थे, जिसमें एक साथ 7, 8 लोग ही रह सकते थे। हमारा रात्रि भोज वहाँ प्रतिदिन 8 से 8:30 बजे तक होता था। रात में सभी बच्चे और अध्यापक उत्सवाग्री के पास एकत्र हो जाते थे, जहाँ मनोरंजन के लिए अलग-अलग विद्यालयों के बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। कार्यक्रम की समाप्ति पर हम 10 बजे तक या कभी-कभी 10:30 बजे तक वापस आ जाते थे और अपने कैंप में सो जाते थे।

दूसरे दिन का हमारा सफ़र था -बी. फॉल. की ओर। हम सभी तैयार होकर सुबह 8:30 बजे तक अपनी मंजिल की ओर रवाना हो गए। बी. फॉल. से संभवतः दोपहर तक हम वापस आ गए और विश्राम करने के बाद तीरंदाजी ओर गोलाबारी जैसी गतिविधियों के लिए मैदान में पहुँच गए। गतिविधियाँ समाप्त होने पर शाम को लगभग 6:30 बजे तक हम सभी अपने टेंट हाउस में वापस आ गए।

तीसरे दिन 6 अक्तूबर को हम सुबह 8 बजे स्काई साइक्लिंग और नौका विहार के लिए निकल गए । वहाँ से हम दोपहर को लगभग 2 बजे तक आ गए और शाम को 17 रुकावटों को पार करने के लिए मैदान में पहुँच गए और आसानी से हमने सारी रुकावटों को पार कर लिया । शाम को तकरीबन 6:30 बजे तक हम अपने टेंट में आ गए और विश्राम करने लगे क्योंकि अगले दिन 7 अक्टूबर को हमें सबसे मुश्किल ट्रैक चौरागढ़ के लिए जाना था ।

सुबह 6:00 बजे उठकर तैयार होकर लगभग 8:30 बजे तक हम अपने सबसे मुश्किल सफर चौरागढ़ की ओर चल पड़े। रास्ते में एक गुफा के अंदर एक महाकाल का मंदिर था ।हमने वहाँ दर्शन किए । 30 कि. मी. का लंबा सफ़र तय करके 6 :30 बजे तक हम वापस अपने टेंट पर आ गए। रात्रिभोज के पश्चात् हम सभी 8:30 बजे तक उत्सवाग्नि के पास एकत्र

हो गए ।आज पांचवा दिन 8 अक्टूबर हमें पांडव मंदिर और पंचमढ़ी संग्रहालय की ओर प्रस्थान करना था। अतः नित्य क्रिया से निवृत्त होकर हम सभी 8:30 बजे तक निकल गए और पांडव मंदिर होते हुए संग्रहालय की ओर प्रस्थान किया जहाँ हमने रोचक जानकारियाँ प्राप्त की। संग्रहालय घूमकर दोपहर तक हम टेंट में वापस आ गए। विश्रामोपरांत शाम को हम सभी रॉक क्लिविंग के लिए मैदान में पहुँच गए। रॉक क्लिविंग के बाद हम 6 :30 बजे तक वापस अपने टेंट पर आ गए।

अनीशा लोधी कक्षा 10 बी

दीपावली

दीपावली अर्थात् दीपों का उत्सव। दीपावली दीपों का उत्सव माना जाता है। । इस दिन हिंदू धर्म में भगवान श्री राम

चौदह वर्ष पश्चात वनवास से वापस आए थे और इसी दिन जैन धर्म में महावीर भगवान को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी। हम दीपावली में लक्ष्मी जी, गणेश जी और महावीर स्वामी जी का पूजन करते हैं। हम अपने परिवार के साथ सभी रिश्तेदारों के घर जाते हैं और बधाईयां देते हैं। इस दिन हम सभी नए नए कपड़े पहनते हैं और बहुत सारी मिठाईयां खाते हैं। रात में सभी साथ में पटाके फोड़ते हैं और बहुत सारे मजे करते हैं। दीपावली के एक दिन पहले धनतेरस मनाई जाती है। इस दिन सभी, सोना, चांदी, बर्तन आदि खरीदते हैं। हम सभी रात में अपने घरों को लाइट से सजाते हैं। दीपावली के दिन पूरा परिवार साथ में रहता है और सभी लोग खुश होते हैं। पूरे घर में खुशी का माहौल होता है और नई नई वस्तुओं से घर सजा हुआ होता है। इसी तरह सभी दीपावली का त्यौहार मनाते हैं।

अंशिका सिंघई कक्षा- 9 ए

प्रदूषण एक समस्या और निदान

प्रदूषण आज की बहुत बड़ी समस्या है जिसे हम झेल रहे हैं। प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं जैसे- जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि। प्रदूषण के कारण हमारा वातावरण खराब हो रहा है। प्रदूषण कई चीजों से होता है जैसे- गाड़ियों के धुएं से, पटाखों से, नदियों में कचड़ा डालने से, किसी भी चीज की आवश्यकता से अधिक ध्वनि करने से आदि। यदि समस्याएं हैं तो उनका निवारण भी है अतः इन समस्याओं के निवारणार्थ हम पेट्रोल की जगह अधिक से अधिक इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रयोग करें, पटाखे न जलाएं, नदियों में कूड़ा कचरा आदि न प्रवाहित करें, अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ और वातावरण को सुरम्य बनाएं।

-मेरु जैन (कक्षा- 9 बी)

बूझो तो जाने

1- तीतर के दो आगे तीतर, तीतर के दो पीछे तीतर
बोलो तो हैं कितने तीतर?
2- बाहर से भूरा और अंदर से सफेद
अंदर का खाते, देते बाहर का फेंक
3- ऐसी चीज़ हूं जो खाते सब हैं पर खा कोई नहीं पाता।
4. ऐसी कौन सी चीज़ है जो पहले काली रहती है और इस्तेमाल करने पर सफ़ेद हो जाती है।

(उत्तर -1. तीन तीतर 2. नारियल 3. कसम 4. कोयला)

-नीर जैन कक्षा 9 ए

शिक्षक कोना

एक बूंद

एक बूंद जब गर्भ समाई
मातृत्व बोध एहसास हुआ
ममता उमड़ घुमड़ घर आई
नव जीवन विस्तार हुआ
फिर वसुधा अंकुर फूट पड़ा
सृष्टि नवीन अवतार हुआ
जिसने नन्हे हाथों को गहि
पेशानी को चूम लिया
छाती से चिपकाकर जिसने
क्रंदन मेरा शांत किया
प्रेम अश्रु से सराबोर मैं
था कौतुक से देख रहा
क्षुधा शांत करती थी वो
क्रंदन से थी घबराती
दौड़ी-दौड़ी आ पास उठा
लाड लडाकर थी हंसाती
सर्वस्व न्योछावर करती मुझ पर
औरों से थी लड़ जाती
शनैः शनैः जब समय हुआ
भाषा बोध विज्ञान बढ़ा
म..म..मम्मा मम्मा कहते कहते
ममता का अभिसार हुआ ।।
साक्षर नहीं निरक्षर थी वो
सभी उलाहने देते थे
पर मैं एक मांगू वो दो चपाती
लाकर देती जाती थी
बाल सुलभ नित्य क्रीडायें
देख मोद-मोद भर जाती थी
कभी चपत लगा जो रो दूं
फुसलाती समझाती थी
ऐसी थी वो निरछल थी
ममता की अद्भुत मूरत थी
उंगली पकड़ कर चलना ही
न केवल सिखलाया था
शुद्ध आचरण और पवित्रता
का भी पाठ पढ़ाया था

-नीरज श्रीवास्तव 'आलोक'
हिंदी शिक्षक

पचमढ़ी का अद्भुत अनुभव

हाल ही में हमने पचमढ़ी की यात्रा की। यह यात्रा हमारे लिए बेहद रोमांचक और यादगार रही। हम पचमढ़ी में भारत स्काउट एंड गाइड के कैंप में 7 दिन रहे, जहां हमने बहुत सी मजेदार और साहसिक गतिविधियाँ कीं।

हमारी यात्रा की शुरुआत पचमढ़ी पहुंचने से हुई। कैम्प में हमें बहुत अच्छा स्वागत मिला, और वहां की प्राकृतिक सुंदरता ने हमें पूरी तरह से आकर्षित कर लिया। पचमढ़ी का मौसम ठंडा और बहुत सुखद था, जो हमारी यात्रा को और भी मजेदार बना रहा था।

हमने पचमढ़ी में कई धार्मिक स्थानों का दौरा किया। सबसे पहले हम चोरागढ़ मंदिर गए, जो एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। वहां से दिखाई देने वाला दृश्य बहुत ही शानदार था, और वहां की शांति ने मन को बहुत सुकून दिया। इसके बाद, हम जटाशंकर मंदिर गए, जो भगवान शिव का एक प्रसिद्ध स्थल है। जटाशंकर मंदिर गुफा में स्थित है, जहां शिव जी की मूर्तियां और प्राकृतिक जल स्रोत देखने को मिलते हैं। यह स्थान बहुत ही आध्यात्मिक और शांति देने वाला था।

हमने गुप्त महादेव मंदिर भी देखा, जो एक छोटी सी गुफा में

स्थित है। यहां पूजा करने का अनुभव बहुत ही पवित्र और आत्मिक था। इन सभी धार्मिक स्थानों ने हमारी यात्रा को बहुत खास बना दिया।

हमने यहां के छात्रों से भी व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उनसे बात की। उनका व्यवहार बहुत ही दोस्ताना था, और हमने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा और अपने अनुभवों को साझा किया। यह समय बहुत ही अच्छा था, और इसने हमें एक-दूसरे से जुड़ने का मौका दिया।

हमने कैम्प में बहुत सी साहसिक गतिविधियाँ भी कीं। कैम्प फायर के दौरान हम सभी ने मिलकर गाने गाए और मस्ती की, जो बहुत ही मजेदार था। इसके बाद, हमने बोटिंग का आनंद लिया, जो हमारे लिए एक बहुत अच्छा अनुभव था। शांत पानी में बोटिंग करना बहुत ही रोमांचक था।

इसके अलावा, माउंट क्लाइम्बिंग का अनुभव भी बहुत ही चुनौतीपूर्ण और रोमांचक था। पहाड़ों पर चढ़ते हुए हमें कुछ अद्भुत दृश्य देखने को मिले। यह एक कठिन गतिविधि थी, लेकिन हम सभी ने मिलकर इसे पूरा किया और बहुत खुश हुए।

पचमढ़ी में बिताए गए 7 दिन हमारे लिए अविस्मरणीय रहे। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक स्थलों की यात्रा, साहसिक गतिविधियाँ, और छात्रों के साथ बिताए गए यादगार पल हमेशा हमारे साथ रहेंगे। पचमढ़ी की यह यात्रा हमारे जीवन का एक अनमोल अनुभव बन गई।

-अविनाश सविता

(सोशल मीडिया इंचार्ज)

व्यक्ति विशेष

हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई का जन्म- 22 अगस्त, 1922, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ एवं मृत्यु- 10 अगस्त, 1995, जबलपुर में। वे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार थे। ये हिंदी के पहले रचनाकार थे, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती हैं, जिनसे किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना लगभग असंभव है। लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को हरिशंकर परसाई ने बहुत ही निकटता से पकड़ा है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवन-मूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा-शैली में एक ख़ास प्रकार का अपनापन नज़र आता है।

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1922 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले में 'जमानी' नामक गाँव में हुआ था। गाँव से प्राम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे नागपुर चले आये थे। 'नागपुर विश्वविद्यालय' से उन्होंने एम. ए. हिंदी की परीक्षा पास की। कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन कार्य भी किया। इसके बाद उन्होंने स्वतंत्र लेखन प्रारंभ कर दिया। उन्होंने जबलपुर से साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन भी किया, परन्तु घाटा होने के कारण इसे बंद करना पड़ा। हरिशंकर परसाई जी ने खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को बहुत ही निकटता से पकड़ा है। उनकी भाषा-शैली में ख़ास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सामने ही बैठा है।

मात्र अठारह वर्ष की उम्र में हरिशंकर परसाई ने ' वन विभाग' में नौकरी की। वे खण्डवा में छः माह तक बतौर अध्यापक भी नियुक्त हुए थे। उन्होंने दो वर्ष (1941-1943 में) जबलपुर में 'स्पेस ट्रेनिंग कॉलेज' में शिक्षण कार्य का अध्ययन किया।

1943 से हरिशंकर जी वहीं 'मॉडल हाई स्कूल' में अध्यापक हो गये। किंतु वर्ष 1952 में हरिशंकर परसाई को यह सरकारी नौकरी छोड़नी पड़ी । उन्होंने वर्ष 1953 से 1957 तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी की। 1957 में उन्होंने नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र लेखन की शुरूआत की।

हरिशंकर परसाई जबलपुर-रायपुर से निकलने वाले अख़बार 'देशबंधु' में पाठकों द्वारा पूछे जाने वाले उनके अनेकों प्रश्नों के उत्तर देते थे। अख़बार में इस स्तम्भ का नाम था- "पूछिये परसाई से"। पहले इस स्तम्भ में हल्के इश्किया और फ़िल्मी सवाल पूछे जाते थे। धीरे-धीरे परसाईजी ने लोगों को गम्भीर सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों की ओर भी प्रवृत्त किया। कुछ समय बाद ही इसका दायरा अंतर्राष्ट्रीय हो गया। यह सहज जन शिक्षा थी। लोग उनके सवाल-जवाब पढ़ने के लिये अख़बार का बड़ी बेचैनी से इंतज़ार करते थे।

हरिशंकर परसाई जी की पहली रचना "स्वर्ग से नरक जहाँ तक" है, जो कि मई, 1948 में प्रहरी में प्रकाशित हुई थी, जिसमें उन्होंने धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास के ख़िलाफ़ पहली बार जमकर लिखा था। धार्मिक खोखला पाखंड उनके लेखन का पहला प्रिय विषय था। वैसे हरिशंकर परसाई कार्लमार्क्स से अधिक प्रभावित थे। परसाई जी की प्रमुख रचनाओं में "सदाचार का ताबीज" प्रसिद्ध रचनाओं में से एक थी जिसमें रिश्वत लेने देने के मनोविज्ञान को उन्होंने प्रमुखता के साथ उकेरा है ।पाखंड, बेईमानी आदि पर परसाई जी ने अपने व्यंग्यों से गहरी चोट की है। वे बोलचाल की सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं और चुटीला व्यंग्य करने में परसाई जी बेजोड़ है ।हरिशंकर परसाई की भाषा में व्यंग्य की प्रधानता है। उनकी भाषा सामान्य और संरचना के कारण विशेष क्षमता रखती है। उनके एक-एक शब्द में व्यंग्य के तीखेपन को स्पष्ट देखा जा सकता है। लोकप्रचलित हिंदी के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेज़ी शब्दों का भी उन्होंने खुलकर प्रयोग किया है। परसाईजी की अलग-अलग रचनाओं में ही नहीं, किसी एक रचना में भी भाषा, भाव और भंगिमा के प्रसंगानुकूल विभिन्न रूप और अनेक स्तर देखे जा सकते हैं। प्रसंग बदलते ही उनकी भाषा-शैली में जिस सहजता से वांछित परिवर्तन आते-जाते हैं, और उससे एक निश्चित व्यंग्य उद्देश्य की भी पूर्ति होती है, उनकी यह कला, चकित कर देने वाली है। परसाईजी की एक रचना की यह पंक्तियाँ कि- 'आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा'- 'राजा रंक फ़कीर' में सूफ़ियाना अंदाज़है, तो वहीं दूसरी ओर ठेठ सड़क-छाप दवाफरोश की यह बाकी अदा भी दर्शनीय है- "निंदा में विटामिन और प्रोटीन होते हैं। निंदा ख़ून साफ करती है, पाचन-क्रिया ठीक करती है, बल और स्फूर्ति देती है। निंदा से मांसपेशियाँपुष्ट होती हैं। निंदा पायरिया का तो शर्तिया इलाज है।"संतों का प्रसंग आने पर हरिशंकर परसाई का शब्द वाक्य-संयोजन और शैली, सभी कुछ एकदम बदल जाता है, जैसे- "संतों को परनिंदा की मनाही होती है, इसलिए वे स्वनिंदा करके स्वास्थ्य अच्छा रखते हैं। मो सम कौन कुटिल खल कामी- यह संत की विनय और

आत्मस्वीकृति नहीं है, टॉनिक है। संत बड़ा काइंयां होता है। हम समझते हैं, वह आत्मस्वीकृति कर रहा है, पर वास्तव में वह विटामिन और प्रोटीन खा रहा है।" एक अन्य रचना में वे "पैसे में बड़ा विटामिन होता है" लिखकर ताकत की जगह 'विटामिन' शब्द से वांछित प्रभाव पैदा कर देते हैं, जैसे बुढ़ापे में बालों की सफेदी के लिए 'सिर पर कासं फूल उठा' या कमज़ोरी के लिए 'टाईफाइड ने सारी बादाम उतार दी।' जब वे लिखते हैं कि 'उनकी बहू आई और बिना कुछ कहे, दही-बड़े डालकर झम्म से लौट गई' तो इस 'झम्म से' लौट जाने से ही झम्म-झम्म पायल बजाती हुई नई-नवेली बहू द्वारा तेज़ीसे थाली में दही-बड़े डालकर लौटने की समूची क्रिया साकार हो जाती है। एक सजीव और गतिशील बिंब मूर्त्त हो जाता है।

जब वे लिखते हैं कि- 'मौसी टर्राई' या 'अश्रुपात होने लगा' तो मौसी सचमुच टर्राती हुई सुन पड़ती है और आंसुओं की झड़ी लगी नजर आती है। 'टर्राई' जैसे देशज और 'अश्रुपात' जैसे तत्सम शब्दों के बिना रचना में न तो यह प्रभाव ही

उत्पन्न किया जा सकता था और न ही इच्छित व्यंग्य।

श्री परसाई जी को विभिन्न पुरस्कार मिले - साहित्य अकादमी पुरस्कार - 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए, शिक्षा सम्मान - मध्य प्रदेश शासन द्वारा, डी.लिट् की मानद उपाधि - 'जबलपुर विश्वविद्यालय' द्वारा शरद जोशी सम्मान आदि।

अपनी हास्य व्यंग्य रचनाओं से सभी के मन को भा लेने वाले हरिशंकर परसाई का निधन 10 अगस्त, 1995 को जबलपुर, मध्य प्रदेश में हुआ। परसाई जी मुख्यतः व्यंग

लेखक थे, किंतु उनका व्यंग केवल मनोरंजन के लिए नहीं है। उन्होंने अपने व्यंग के द्वारा बार-बार पाठकों का ध्यान व्यक्ति और समाज की उन कमज़ोरियों और विसंगतियों की ओर आकृष्ट किया था, जो हमारे जीवन को दूभर बना रही हैं। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण पर अपनी व्यंग रचनाओं के माध्यम से करारे प्रहार किए हैं। उनका हिन्दी व्यंग साहित्य अनूठा है। परसाईजी अपने लेखन को एक सामाजिक कर्म के रूप में परिभाषित करते थे। उनकी मान्यता थी कि सामाजिक अनुभव के बिना सच्चा और वास्तविक साहित्य लिखा ही नहीं जा सकता। हरिशंकर परसाई ने हिन्दी साहित्य में व्यंग विधा को एक नई पहचान दी और उसे एक अलग रूप प्रदान किया, जिसके लिए हिन्दी साहित्य उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

(भारत डिस्कवरी से साभार)

विनम्र निवेदन

यद्यपि पत्रिका प्रकाशित करने से पूर्व यह ध्यान रखा गया है कि पत्रिका में कोई त्रुटि न रहे तथापि कोई त्रुटि रह गयी हो तो संपादक मंडल क्षमा प्रार्थी है ।पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

-संपादक

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक:-प्राचार्य ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. हायर सेकंडरी स्कूल , खुरई
मुख्य संपादक:- डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव
टंकण सहयोग:- श्री नीरज श्रीवास्तव
छायांकन:- श्री प्रशांत सील
सहयोग:- हिंदी विभाग
तकनीकी सहायता:- अविनाश सविता

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यूआर स्कैन करे

ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. हायर सेकंडरी स्कूल, खुरई